आचार्य श्री विद्यासागर एवं आत्मनिर्भर भारत

- सुरभि जैन शोधार्थी
- डॉ सोनिया यादव , शोध निर्देशक वां असिस्टेंट प्रोफेसर
मंगलायतन यूनिवर्सिटी , अलीगढ़

" हजारों वर्ष नर्गिस अपनी बेनूरी पे रोती है,
बड़ी मुश्किल से होला है चमन में दीदावर पैदा । "

- अल्लामा इक़बाल

प्रस्तावना - आचार्य श्री विद्यासागर महाराज श्री का जन्म अश्विन शुक्ल शरद पूर्णिमा के दिन 10 अक्टूबर 1946 में हुआ था। आप गंभीर विचारक ,कुशल - वक्ता , श्रेष्ठ गुरु , कुशल मार्गदर्शक के रूप में इस देश , समाज को दिशा बोध देने निरंतर प्रयत्नशील रहे। आजादी के इतने वर्षों के बाद भी भारत की स्थिति देख कर आचार्य श्री का मन द्रवित हो उठता था, वह सदैव आर्यखंड के भारत देश के वर्तमान को पुराणों एवं शास्त्रों में वर्णित स्वरूप में देखने की कोशिश करते , तब उस स्वरूप और वर्तमान स्वरूप में कोई तालमेल नहीं पाते थे, कारणों को खोजने पर , अनेक कारण ज्ञात हुए उसमें प्रमुख थे - भारत में स्व-निर्भरता का अभाव , भारत की शिक्षा नीति , लघु कुटीर उद्योंगों का विनाश , मानव का नैतिक चरित्र , मानवता ,वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना का नितांत अभाव ।

आचार्य श्री विद्यासागर महाराज जी ने भारत देश के विभिन्न क्षेत्रों को उन्नयन कर आत्म-निर्भरता की ओर बढ़ने की दिशा में कई महत्वपूर्ण योगदान दिये है , जो अध्यात्मिक , स्वास्थ्य , शैक्षिक , सामाजिक क्षेत्रों में अपनी भूमिका का निर्वहन करने में पूर्णतः सफल हुए है ।

1. शिक्षा - शिक्षा के द्वारा ही मानव जीवन का सर्वांगीण विकास होता है, मात्र शाब्दिक ज्ञान शिक्षा नहीं है , शिक्षा वह है जो हमारे सद्विचारों को पोषित करें, नैतिकता , मानवता , दया, करुणा, वात्सल्य जैसे भाव हृदय में जाग्रत करे। इस हेतु आचार्य श्री ने शिक्षकों को भी सचेत किया कि अगर आप धन वैभव एवं संपदा के प्रति रुझान रखते है तो शिक्षा के क्षेत्र को नहीं चुने।

" शिक्षा क्षेत्र में ,
लक्ष्मी के उपासक ,
प्रवेश ना लें।"[1]

1.1 ज्ञानोपार्जन - आचार्य श्री प्राचीन भारतीय शिक्षा पद्धति के पक्षधर थे , गुरुकुल परंपरा , बालिका शिक्षा, धर्म-दर्शन , संस्कृति केन्द्र की स्थापना हेतु आपके विचार समसामयिक थे। बालिकाओं की शिक्षा के लिये गुरुकुलों की भाँति पाँच स्थलों पर प्रतिभास्थली एवं प्रतिभा प्रतिक्षा का संचालन पूर्ण निष्ठा के साथ किया जा रहा है। जिसमें शिक्षा प्राप्त करके बालिकाएँ नैतिक , चारित्रिक, आत्मिक गुणों को धारण करने के साथ ही डॉक्टर , वैज्ञानिक, जज, प्रशासनिक सेवाओं की तैयारी भी कर रही है । यह छात्राएँ आत्मनिर्भरता हेतु दैनिक जीवन उपयोगी घरेलू भोज्य पदार्थों को निर्मित करने में पारंगत होकर शुद्ध भोजन बनाना भी सीख रही हैं। आज की भ्रमित पीढ़ी जहाँ बाजार -वादी भ्रमजाल में फंसकर अपने स्वास्थ्य के खिलवाड़ कर रही है तथा

[1] (विचारों की परछाइयाँ. 3rd edn, 2023),648

कोविड 19 की महामारी के दुष्परिणामों को देखने के बाद हमें बाजार की वस्तु का उपयोग सीमित करने की सलाह चिकित्सकों द्वारा दी जाती है। उन परिस्थितियाँ में आज की महत्वपूर्ण आवश्यकता बालिकाओं को सभी क्षेत्रों में आत्मनिर्भर बनाना आवश्यक हैं।

1.2 युवाओं के प्रेरणा स्रोत - "उठो, भारत की ओर लौट चलो ।" आचार्य श्री के इन वाक्यों ने युवाओं में उत्साह का संचरण किया है , विदेश में रहने वाले अनेक युवा आजादी , पैसा, पद, प्रतिष्ठा, छोड़कर आचार्य श्री की चरण-शरण लेकर स्वयं के जीवन के कल्याण तथा परमार्थ में अपने जीवन को समर्पित किये हुए हैं।आज की युवा पीढ़ी जिस भौतिकवादी चकाचौंध में उलझकर अपने स्वरूप को भूलकर स्वप्नों के मायाजाल में उलझी हुई हैं , उनके लिए यह युवा संन्यासी पथ - प्रदर्शक के रूप आलोकित हैं जो लाखों -करोड़ो के पैकेज छोड़कर स्वपर कल्याण में निमग्न हैं।

1.3 जीवनाधार शिक्षा - आचार्य श्री ने युवाओं को आत्म निर्भरता हेतु नौकरी के पीछे नही दौड़ने का संदेश दिया है , आपके हाइकु काव्य से यह संदेश मिलता है -

"रोटी ना मांगो ,
रोटी बनाना सीखो ,
खिला के खाओ। "[2]

अतः स्वाभिमान , नैतिकता, सामाजिकता के गुण भी विकसित करके आत्मनिर्भर भारत की और वापस लौटा जा सकता है। व्यवसायिक शिक्षा के क्षेत्र में विभिन्न प्रशिक्षण संस्थानों का संचालन किया जा रहा है , जिसमें प्रशिक्षण प्राप्त करके अनेक छात्र -छात्राएँ आत्मनिर्भरता के साथ देशहित में पूर्ण निष्ठा से कार्य करने हेतु कृत -संकल्पित हैं।

1.4 शिक्षा एवं संस्कार - आचार्य श्री का मानना था कि शिक्षा के साथ संस्कारों का बीजारोपण बाल-मन में ही कर देना चाहिए , जिससे बालक सुदृढ़ वट-वृक्ष के रूप में आकार ले सके। देश व समाज के एक जिम्मेदार नागरिक के रूप में उनका विकास हो सके । इस हेतु शिक्षा नीति में प्रारंभिक शिक्षा मातृभाषा में ही दिये जाने का सुझाव नई शिक्षानीति 2020 में दिया था । आपका मानना है कि परिवार बालक के विकास के केन्द्र बिन्दु होते है अतः बालकों को संयुक्त - परिवार में विकास के पूर्ण अवसर उपलब्ध कराये जाना चाहिये। आचार्य श्री बालकों को पाश्चात्य संस्कृति के नये विचारों के स्थान पर अपने देश की आदर्श शिक्षा एवं राष्ट्रभक्ति का संदेश देते हुए लिखते हैं-

"शिक्षा से जुड़ो ,
नई नीति से नहीं,
राष्ट्रीय बनो।" [3]

छात्रों को अपने इतिहास ,धर्म , दर्शन से जोड़ने हेतु आपके मार्गदर्शन से कई शिक्षण संस्थानों की स्थापना की गई । विद्या निकेतन, (संस्कृत एवं पारंपरिक शिक्षा के लिए) ज्ञानोदय विद्यापीठ दमोह की स्थापना छात्रों को पारंपरिक एवं आधुनिक शिक्षा का समन्वय करके छात्रों को सुसंस्कारित , आत्मनिर्भरता का पाठ पढ़ाने हेतु कृत संकल्पित है। , आपके शिष्य मुनि श्री सुधासागर महाराज जी के निर्देशन में श्रमण संस्कृति संस्थान

[2] (विचारों की परछाइयाँ. 3rd edn, 2023) haiku no. 523
[3] (विचारों की परछाइयाँ. 3rd edn, 2023) haiku no.577

जयपुर भी घर बैठे ही बालक - नारी-वृद्ध समाज को संस्कृति के साथ धर्म-दर्शन से जोड़ने हेतु महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है।

2. स्वास्थ्य - स्वस्थ्य शरीर में ही स्वस्थ मन निवास करता हैं। तभी हम अपनी आत्मिक शक्तियाँ को जाग्रत करके जीवन के सर्वोच्च लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। "चिकित्सा मात्र शरीर के रोगों का निदान नहीं है यह मानव के मानसिक , आध्यात्मिक , आत्मिक बल को भी सुदृढ़ बनाने में मदद करती है। " आपके दृष्टिकोण में प्राकृतिक, योग, आयुर्वेद , आध्यात्मिक चिकित्सा ही सर्वोत्तम हैं इस हेतु आपकी प्रेरणा से चिकित्सालयों की स्थापना की गई।

2.1. प्राकृतिक चिकित्सा - प्राकृतिक चिकित्सा हेतु 'पंचगव्य' चिकित्सा के विकास हेतु गौशाला संवर्धन का कार्य भी अनेक स्थलों पर किया जा रहा हैं। गौमूत्र ,गोबर , दूध , दही , घी से बनी औषधियां रोग का संपूर्ण निदान करके निरोगी काया हेतु सर्वोत्तम हैं । प्राकृतिक चिकित्सा में मिट्टी सेंक , धूपस्थान , गर्म एवं ठंडा जल स्नान एवं अन्य प्राकृतिक पद्धतियों से रोग निवारण प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्रों में किया जा रहा हैं। कई गोशालाएँ भी पंचगव्य औषधि निर्माण केन्द्र के रूप में कार्यरत हैं। यह कुटीर उद्योग के रूप में आत्म निर्भरता की ओर बढ़ता कदम हैं।

आचार्य श्री ने आध्यात्मिक एवं आत्मिक विकास हेतु 'ध्यान और योग' को महत्वपूर्ण माना है । इनके अभ्यास द्वारा ही हम मन पर विजय प्राप्त करके आत्मिक उत्थान कर सकेंगें । प्राणायाम द्वारा हम शरीर में रोग प्रतिरोधक क्षमता को विकसित कर सकते हैं।

आपकी जीवन - शैली स्वास्थ्य का सर्वोत्तम उदाहरण है , शुद्ध जल, वायु एवं प्राकृतिक संसाधन ही शरीर एवं मन को नियंत्रण में रखते हैं। दिगंबर मुद्रा,संयमित भोजन भी स्वस्थ जीवन का आधार है। इस हाइकु में योग साधना से ही उपयोग की शुद्धि करके हमारे जीवन को महान लक्ष्य प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर किया गया हैं।

" योग साधन ,
है उपयोग शुद्धि ,
साध्य सिद्ध हो । " [4]

2.2. चित्किित्सालयों की स्थापना - आपकी प्रेरणा से ही भारत में भाग्योदय , पूर्णायु , प्राकृतिक चिकित्सालयों की स्थापना मानव मात्र के प्रति करुणा भाव से स्थापित की गई हैं। जो निरंतर पीड़ित मानवों के रोग निवारण के लिए कार्यरत हैं।

(क) पूर्णायु -आयुर्वेद चिकित्सा पद्धति का केन्द्र हैं, जो प्राचीन भारत के रोग निवारण चिकित्सा पद्धति को अपनाकर रोग का निदान जड़ी - बूटी के माध्यम से करता है । इस पद्धति से रोग निदान के आश्चर्य जनक परिणाम सामने आए है । जिन रोगों का निदान अन्य चिकित्सा पद्धतियों में संभव नहीं हैं। आयुर्वेद चिकित्सा में जड़ी -बूटी की आवश्यकता से ग्रामीण क्षेत्रों में आत्म निर्भरता के अवसर प्राप्त होंगे तथा औषधियुक्त वृक्षारोपण से पर्यावरण भी स्वच्छ होगा।

[4] (विचारों की परछाइयाँ. 3rd edn, 2023) haiku no. 34

(ख) अध्यात्मिक - आचार्य श्री शारीरिक स्वास्थ्य हेतु मानसिक चेतना का विकास आवश्यक हैं। आपके शिष्य मुनि श्री प्रमाण सागर जी एवं मुनि श्री प्रणम्य सागरजी लगातार ध्यान एवं अहम् योग द्वारा आध्यात्मिक विकास में योगदान प्रदान कर रहे है।

2.3. पर्यावरण संरक्षण - पर्यावरण संरक्षण हेतु आपका दृष्टिकोण उच्च था, आप सदैव अहिंसक रहे तथा लोगों को भी सदैव वृक्षों के साथ रहने हेतु प्रेरित किया, परिणाम स्वरूप पर्यावरण संतुलित रूप में मानवीय आवश्यकताओं को पूरा करने में अपना सहयोग बनाये रखें । पर्यावरण असंतुलन से होने वाले भयावह परिणामों के प्रति आप आगाज कर चुके है सीमित आवश्यकताओं साथ के मानव को जीवन यापन के लिए सदैव प्रेरित किया। आपका आहार (भोजन) चौबीस घंटे में एक ही बार होता था , तथा निहार में मात्र एक कमंडलु जल ही चौबीस घंटे में पर्याप्त था । पंडित लालबहादुर शास्त्री ने भी तत्कालीन प्रधानमंत्री रहते हुए देश में अनाज संकट के समय सप्ताह में एक दिन व्रत रखने हेतु प्रेरित किया था । जिससे आत्म निर्भरता प्राप्त कर मानव अपने ज्ञान को उन्नति की ओर अग्रसर कर सके । पर्यावरण संरक्षण हेतु स्वच्छता के महत्व को बताते हुए आचार्य श्री कहते है - स्वच्छ तन ,स्वच्छ मन, स्वच्छ पर्यावरण । भगवान महावीर के पंचशील के सिद्धांतो को अपने जीवन में धारण करते हुए मानव मात्र को उन्हें अपनाने हेतु प्रेरित किया। जिससे मानव अपनी जीवन शैली को संयमित करते हुए पर्यावरण संरक्षण द्वारा आत्म निर्भरता की दिशा निर्धारित कर सके। पर्यावरण संरक्षण की दिशा - निर्देशित करते हुए जैविक खेती की ओर लौटने का आगाज किया है, जिससे रासायनिक उर्वरक एवं खाद से होने वाले दुष्परिणामों से बचा जा सके । गो -सेवा द्वारा पर्यावरण को सुरक्षित एवं संरक्षित रखा जा सकता है। गाय का गोबर जैविक खेती का प्रमुख घटक है जिससे पृथ्वी एवं फसलों को बगैर हानि पहुँचाए उन्नत किस्म की फसल प्राप्त की जा सकती हैं। भारत में दयोदय पशुकेन्द्र एवं गौ सेवा केन्द्रों की स्थापना

3. हथकरघा - आचार्य श्री ने भारत का सपना पुनः आत्मनिर्भर भारत के रूप में देखा , इस हेतु भारत की अधिकांश जनता जो ग्रामों में निवास करती हैं , उनके लघु एवं कुटीर उद्योंगो को पुनजीर्वित करना होगा , उन्हें नगरों की पलायन वृत्ति से रोकना होगा। तभी भारत का पुनरुत्थान हो सकेगा । इसके लिए आचार्य श्री ने मानवीय संवेदना से युक्त हथकरघा उद्योग की पुर्नस्थापना हेतु प्रेरणा प्रदान की , हथकरघा उद्योग प्राचीन भारत के प्रमुख उद्योगों में सम्मिलित था ,पावरलूम के आने के बाद धीरे धीरे कुटीर उद्योग नष्ट होने की कगार पर आ गए। देश में बढ़ती बेरोजगारी , हिंसा, चोरी की घटनाओं के बीच युवाओं की निराशा प्रवृत्ति ने आचार्य श्री द्वारा सुझाये हथकरघा उद्योग को हाथों - हाथ लिया । आज भारत में अपनापन, श्रमदान, हथकरघा अनेक नामों से हथकरघा उद्योग भारत में अनेक स्थलों पर संचालित किये जा रहे हैं। जेल के कैदियों की करुणा ने आचार्य श्री को द्रवित कर दिया , आपके उपदेशों को सुनकर जेल के कैदियों ने आजीवन मासांहार का त्याग कर दिया , वहीं आपने इन कैदियों को हथकरघा से वस्त्र तैयार करने हेतु प्रेरित किया कई कैदियों की स्वीकृति मिलने के बाद उन्हें प्रशिक्षण के बाद जेल में ही हथकरघा केंद्र स्थापित किये गए । जिन पर कार्य करके कैदी आर्थिक रूप से सक्षम होकर परिवार की मदद कर रहे है , वहीं जेल से छूटने के बाद उन्हें व्यापार हेतु आर्थिक तंगी से नहीं जूझना होगा। हथकरघा केन्द्र के वस्त्रों की माँग दिन - प्रतिदिन , देश - विदेश में बढ़ती जा रही हैं । एक बार अपनापन हथकरघा के कैदी साथियों ने आचार्य श्री जब दूर थे, उन्हें अपना नमोस्तु का संदेश भेजा तब संदेशवाहक के माध्यम से आचार्य श्री ने उन्हें आशीर्वाद देते हुए इस हाइकु की रचना की थी ।

"दूर भले हूं ,
निकट भेज देता ,
अपनापन ।" [5]

देश में बढ़ती जनसंख्या , बढ़ती बेरोजगारी को रोकने , व्यापक रोजगार दिलाने हेतु हथकरघा केन्द्र का सर्वप्रथम प्रारंभ कुन्डलपुर में किया गया था । इन्हें प्रारंभ करने के साथ ही अपने प्रवचन में आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज ने कहा था कि -

1. .इन केन्द्रों से युवाओं के हाथ में काम मिलेगा , और देश में बेरोजगारी की समस्या से निपटने में मदद मिलेगी ।
2. हाथकरघा के प्रचलन से अहिंसा के मार्ग पर चलने का विकल्प रहेगा, विभिन्न प्रकार के रसायनों के प्रभाव से मुक्ति मिलेगी ।
3. . युवाओं को नौकरी के चक्कर में उधर उधर नहीं भटकना पडेगा, बल्कि अपना खुद का व्यवसाय शुरू करके दूसरों को रोजगार के अवसर पैदा कर सकते हैं।" [6]सुदेशवाला जैन

हथकरघा केन्द्रों के विशेष गुण -

1. .हथकरघा केन्द्रों के वस्त्र सूनी होने से अहिंसक होते हैं।
2. . वस्त्रों में साइनिंग प्रक्रिया नहीं होने से चर्बी का प्रयोग नहीं किया जाता है ।
3. पोलिस्टर , टेरिकाट का प्रयोग नहीं होने से यह वस्त्र स्वास्थ्य के लिये लाभकारी होते हैं।
4. बिना बिजली का प्रयोग किये जाने के कारण यह वस्त्र पूर्णतः पर्यावरण संरक्षक होते हैं ।

अतः हथकरघा उद्योगों का उद्देश्य बेरोजगारी दूर करने , पलायन वृत्ति को रोकने , प्रशिक्षण केन्द्रों की स्थापना करना है । इन केन्द्रो में प्रशिक्षित युवाओं को कार्य के साथ , मानदेय एवं हथकरघा भी प्रदान किये जा रहे है । ग्रामीण हथकरघा प्रशिक्षित युवाओं को कच्चा माल प्रदान करना एवं तैयार वस्त्रों हेतु बाजार की भी उपलब्धता कराई जा रही हैं। जिससे यह युवा आत्मनिर्भर भारत की संकल्पना हेतु कृत संकल्पित हैं।आचार्य श्री ने भारत के युवाओं को संबोधित करते हुए 'हाइकु' कविता भी लिखी हैं

"उड़ना भूली ,
चिड़ियाँ सोने की तू ,
उठ उड़ जा " ।[7]

4. **पूरी मैत्री** - पूरी मैत्री आचार्य श्री विद्यासागर महाराज की वह परिकल्पना है जिसके अंतर्गत भारत में लघु एवं कुटीर उद्योगों का विकास करके स्व - रोजगार के अवसर प्रदान किये जा सकें ।आचार्य श्री ने अपने प्रवचनों में लगातार " हर घर को काम, हर हाथ को काम," के माध्यम से बेरोजगारी दूर करने ,शुद्ध सामग्री की उपलब्धता, स्थानीय बाजार को बढ़ावा देना,छिपी प्रतिभा की पहचान के साथ आत्म निर्भरता मुख्य उद्देश्य हैं। अशुद्ध डिवा बंद रसायन युक्त खाद्य पदार्थ से जनता का बचाना पूरी मैत्री का ध्येय हैं ।

[5] (विचारों की परछाइयॉ. 3rd edn, 2023) haiku no. 594
[6] (जैन, 2020, p. Chapter 6)
[7] (विचारों की परछाइयॉ. 3rd edn, 2023) haiku no. 355

यह योजना महिला सशक्तिकरण हेतु संगठित समूह है,जिसमें महिलाएँ घरेलू शुद्ध ,सात्विक घरेलू उत्पाद उचित मूल्य पर आसानी से उपलब्ध हो जाते हैं। जिसमें शुद्धता की पूर्ण जानकारी रहती है जबकि बाजार में उपलब्ध अन्य सामग्री शाकाहार के नाम पर मासांहार भोजन सामग्री में मिलाकर परोसा जा रहा हैं। यह पूर्णतः घरेलू उत्पाद हैं। जिसमें आवश्यक सामग्री जैसे मसाले, पापड़ , नमकीन, केक ,बिस्किट आदि मांग के आधार पर तैयार कर दिये जाते हैं। जिससे आत्म -निर्भरता की दिशा में आगे बढ़ने के साथ ही घरेलू एवं कुटीर उद्योगों को बढ़ावा मिल रहा हैं।

5. विद्यांजली - मानव मन सौंदर्य का सदैव ही आकांक्षी रहा हैं। विद्यांजली प्रकल्प में शुद्ध ,शाकाहार युक्त प्रसाधन सामग्री को प्रयुक्त करके हस्तशिल्प से तैयार किया जाता हैं। यह वस्तुएं पूर्णतः प्राकृतिक एवं जैविक होती हैं। इसमें पौधों से प्राप्त अर्क को निकाल कर अनेक विधियाँ से परिष्कृत करके सामग्री का निर्माण किया जाता हैं। यह उत्पाद पूर्णतः अहिंसक , रसायन मुक्त होते हैं। इस प्रकल्प को आरंभ करने वाले उद्यमी ने विदेशों से प्राप्त आय के विकल्प को छोड़कर आचार्य श्री की प्रेरणा से स्वदेश में उद्यमिता की नींव रखी हैं। विद्यांजली द्वारा उत्पादित वस्तुओं का प्रयोग हमें मासांहार युक्त वस्तुओं से बचा कर जीव रक्षा हेतु हमें प्रेरित कर रहा हैं।शारीरिक सौंदर्य एवं श्रृंगार से पूर्व मन के सौंदर्य और श्रृंगार पर ध्यान देना विद्यांजलि का ध्येय है।

आज का युवा निरंतर पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित होकर विवेकहीन जीवन शैली में डूब कर अपने संस्कारों पर कुठाराघात कर रहे है वही कुछ युवा देश प्रेम, राष्ट्र भक्ति का जज्बा ,आचार्य श्री की प्रेरणा लेकर देश को 'मेड इन भारत' के स्वप्न पूरे करने हेतु प्रयासरत हैं। एवं भारत को विश्व गुरु बनाने हेतु संकल्पित हैं ।

श्रीमती स्मृति ईरानी ने आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के दर्शनोपरांत कहा था- " अहिंसा के मार्ग पर चलना , स्वावलंबन के साथ जीना और प्रभु स्मरण करते हुए समाज के संरक्षण में अपने आपको समर्पित करने का भाव आपके माध्यम से जो जन मानस में जागृत हुआ है उसके लिए मैं आपके श्री चरणों को सादर वंदन करती हूं।"[8]

आचार्य श्री ने भारत की जनता के लिए उनके माध्यम से आशीर्वचन में कहा था- " भारत को स्वतंत्र हुए कई वर्ष होने के बावजूद पूर्व स्थिति में नहीं आए हैं। भारत को आगे बढ़ाने साथ संस्कारित करने की दिशा में काम करना चाहिए ,हमें अपनी संस्कृति में पुनः लौटना है भारत की जीवंत संस्कृति अहिंसा ती हैं भारत वासना विलासित का नहीं बल्कि उपासना और साधना को पूजने वाला देश है। अतः हमें अपनी संस्कृति के अनुरूप ही विश्वपटल पर भारत को आदर्श बना कर आत्मनिर्भरता की दिशा में आगे बढ़ना है। भारत गुरु था और रहेगा।"[9]

" भारत बसा,
उनसे जिनका तो,
घर न बसा ।" [10]

संदर्भ ग्रंथसूची

[8] मेरे गुरुवर... आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज, 2018)
[9] मेरे गुरुवर... आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज, 2018)
[10] (विचारों की परछाइयाँ. 3rd edn, 2023) haiku no. 651

1. Contributors to Wikimedia projects (2024) आचार्य विद्यासागर. https://hi.m.wikipedia.org/wiki/%E0%A4%86%E0%A4%9A%E0%A4%BE%E0%A4%B0%E0%A5%8D%E0%A4%AF_%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%A6%E0%A5%8D%E0%A4%AF%E0%A4%BE%E0%A4%B8%E0%A4%BE%E0%A4%97%E0%A4%B0
2. विचारों की परछाइयाँ. 3rd edn (2023). धर्मोदय विद्यापीठ, सागर.
3. मेरे गुरुवर... आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज (2018) Acharya shri Vidyasagar ji Maharaj जैन आचार्यश्री विद्यासागरजी. https://vidyasagar.guru/.
4. दयोदय महासंघ - आचार्य श्री १०८ विद्यासागर जी महाराज के आशीर्वाद से संचालित एवं मार्गदर्शित.... (no date). https://dayodaymahasangh.org/about-us.
5. अनासक्त महायोगी, संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महामुनिराज (2024). https://pranamyasagar.guru/guru-aachaarya-shree-vidya-sagar-jee/.
6. शिक्षा और कौशल विकास के क्षेत्र में आचार्य विद्यासागर जी के विचारों का अध्ययन मध्य प्रदेश के संदर्भ में (2020). Ph.D thesis. ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय , जयपुर,